वैदिक काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

डॉ. चंदा कुमारी

वैदिक सभ्यता के प्रारंभिक काल में नारियों की स्थिति काफी अच्छी थी। इसका अनुमान वेदों के अध्ययन से भी होता है। वेदों में सृष्टि की आधार भूत आद्यशक्ति स्वरूपिणी नारी के विविध रूप यंत्र–तत्र वर्णित है। वैदिक समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था होने पर भी नारियों की स्थिति सम्मान जनक थी। यह एक तरह से नारियों का स्वर्णकाल था। वैदिक काल में नारी की मुख्यतः तीन रूपों पर विचार करने पर हम नारी को समाज में तत्कालीन स्थिति पर सभ्यता प्रकाश डाल सकते हैं– वह तीन रूप है– पुत्री, पत्नी व माता। वैदिक समाज में कहीं–कहीं तो नारी को नर से श्रेष्ठ माना गया है। इस संबंध में मैत्रायणी संहिता में नारी को पुरूर्शों से भी श्रेष्ठ माना गया है। अथर्ववेद में नारी को पुरूष के बराबर बताया गया है। कन्या के रूप में निश्चित निर्भय विचरण करती हुई मूल मर्यादा का पालन करती थी।